Asia - Drainage Pattern
एशिया महाद्वीप का अपवाह तंत्र

एशिया जैसे बड़े महाद्वीप के लिए अपवाह का महत्व बहुत अधिक है। जल-प्रवाह के अंतरगत, नदियों अथवा बहते हुए जल का अध्ययन होता है और नदियाँ किसी देश अथवा महाद्वीप के विकास में सर्वाधिक सहायक होती है।

एशिया महाद्वीप के अपवाह में प्राचीन प्राचीन एवं ~~नवीन~~ नवीन दोनों प्रकार के नदी अपवाह मिलते है। कठोर चट्टानों से युक्त उत्तर के प्राचिनतम भूखण्डों वाले क्षेत्रों में बहने वाली नदियाँ - ओब, येनीसी, लीना, इन्द्रगिरिका और अन्य सहायक नदियां। एशिया की प्राचीन नदियों में से है जबकि हिमालय पर्वत श्रेणियों से निकलने वाली ब्रह्मपुत्र, यांग्टिसीक्याग, गंगा, सिन्धु, ब्रह्मपुत्र, झावदी आदि नवीन नदियों में से है। इस संबंध में एक रोचक बात यह भी है कि दक्षिण के प्राचीनतम भूखण्डों में मिलने वाली गोदावरी, कृष्णा, कावेरी, नर्मदा एवं ताप्ती नदियां अपनी घाटियों को निरंतर गहरी करती जा रही है तथा इसके दूसरी ओर भारत के विशाल उत्तरी मैदानी भाग में बहने वाली गंगा, यमुना, सिन्धु नदियां तथा इन नदियों की सहायक नदियां अपनी घाटियों में निरंतर मिट्टी की परतें जमा कर रही है।

तीन ओर महासागर से घिरे हुए एशिया महाद्वीप की अधिकांश नदियाँ मध्य एशिया के उच्च पर्वतीय एवं पठारी भागों से निकलकर उत्तर, पूर्व एवं दक्षिण दिशाओं की ओर प्रवाहित होती हुई क्रमशः आर्कटिक, प्रशांत और हिन्द महासागरों में

गिरती है लेकिन फिर भी एशिया महाद्वीप का लगभग 80 लाख वर्ग km का आंतरिक भाग ऐसा है जिसका जल किसी सागर में गिरकर शुष्क भागों में सूखकर प्रायः विलीन हो जाता है।
उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर एशिया महाद्वीप को अपवाह के दृष्टिकोण से निम्न 4 क्षेत्रों में विभाजित किया गया है। —
(1). प्रशांत महासागरीय अपवाह क्षेत्र
(2). हिन्द महासागरीय अपवाह क्षेत्र
(3). आर्कटिक महासागरीय अपवाह क्षेत्र
(4). आंतरिक अपवाह क्षेत्र।

(1). प्रशांत महासागरीय अपवाह क्षेत्र → इस अपवाह क्षेत्र का विस्तार अपेक्षाकृत कम है। इस महासागर में अपवाह क्षेत्र की मुख्य नदियां आमूर, ह्वांगहो, यांगटिसीक्यांग, सीक्यांग, मीकांग, मिनाम, लाल नदियां है। अन्य नदियों में आमूर की सहायक नदियां उसूरी, सुगारी, ह्वांगहो की सहायक नदियां वी-हो तथा फेन-हो, यांगटिसीक्यांग की सहायक नदियां हान, मिन, कान, चालिंग, सियांग इत्यादि नदियां है। इस अपवाह क्षेत्र में अनेक प्रकार के अपवाह स्वरूप देखने को मिलते हैं जैसे - ह्वांगहो नदी का आयताकार प्रवाह प्रतिरूप, यांगटिसीक्यांग का वृक्षाकार अपवाह प्रतिरूप प्रणाली देखने को मिलती है। इन नदियों का महत्व सिंचाई, कृषि एवं परिवहन के दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है।

एशिया महाद्वीप का अपवाह तन्त्र

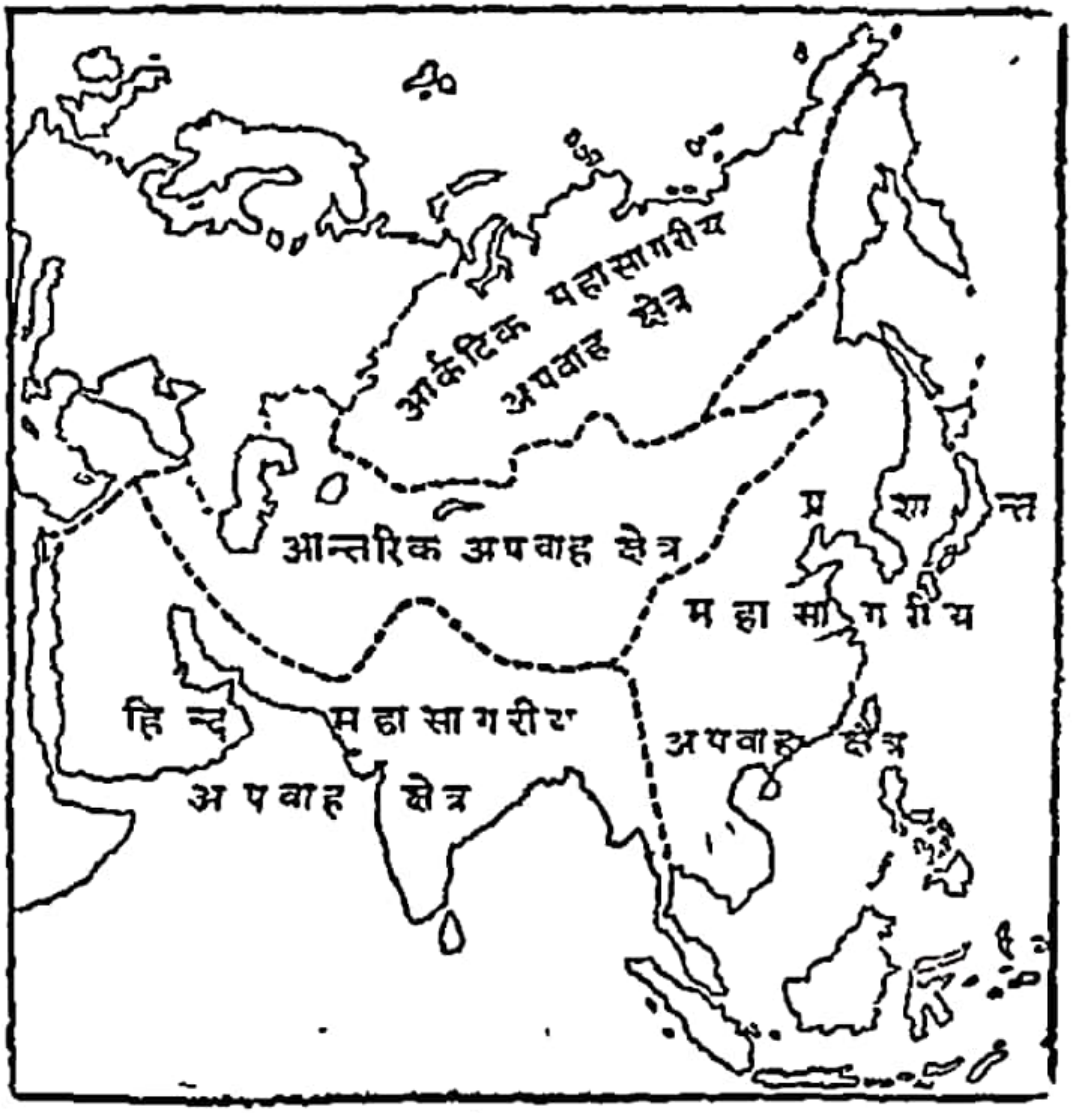

Scanned with CamScanner

PAGE NO :
DATE :

इन नदियों ने उपजाऊ डेल्टा मैदानों का निर्माण किया है। चीन का उत्तरी मैदान ह्वांगहो की ही देन है। भयंकर बाढ़ लाने के कारण ही ह्वांगहो को चीन का शोक भी कहते हैं।

(2). हिन्द महासागर अपवाह क्षेत्र → इस अपवाह क्षेत्र के पश्चिम में दजला एवं फरात नदियों के उद्गम स्थान से लेकर पूर्व में मलेशिया तक फैला हुआ है। इस अपवाह क्षेत्र की मुख्य नदियां दजला, फरात, सिन्धु, गंगा एवं ब्रह्मपुत्र है। अन्य नदियों में इरावदी, सालविन, चिन्दविन, गोदावरी, नर्मदा, ताप्ती, कावेरी, महानदी आदि है। इस अपवाह की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यहाँ नदी अपहरण के अनेक उदाहरण मिलते हैं। इरावदी और सिन्धु इसके बड़े उदाहरण है। भारत के दक्षिण प्रायद्वीपीय पठार पर बहने वाली नदियां मार्ग परिवर्तन की अपेक्षा अपनी घाटियां गहरी करने में लगी हुई है। इस प्रकार इन नदियों का अपवाह पूर्ववर्ती अपवाह प्रणाली के रूप में है। इस क्षेत्र की बहने वाली नदियों का कृषि - सिंचाई के दृष्टिकोण से अधिक महत्व है। गंगा एवं सिन्धु का मैदान एशिया का सबसे अधिक उपजाऊ मैदान है। बर्मा की इरावदी नदी ने देश को प्रचुर आर्थिक जीवन प्रदान किया है। इराक अपनी दोनों नदियों दजला एवं फरात की देन है।

Scanned with CamScanner

PAGE NO :
DATE :

(3) आर्कटिक महासागर अपवाह क्षेत्र → एशिया महाद्वीप के उत्तरी भाग में स्थित यह सबसे बड़ा अपवाह क्षेत्र है। इस क्षेत्र में नदियां मध्यवर्ती उच्च एवं उर्मि प्रदेशों से निकलकर एशिया के विशाल उत्तरी मैदानी भागों पर बहती हुई अन्त में आर्कटिक महासागर में गिरती है। आर्कटिक महासागर का वर्ष में अधिकांश भाग बर्फ से जमा रहने के कारण इस क्षेत्र की नदियां अपने मुहानों पर गिरने से पूर्व दोनों किनारों पर फैल जाती हैं जिससे नदियों के बेसीनों में विस्तृत दलदल बन जाते हैं। जिसकारण इस क्षेत्र की नदियों का आर्थिक महत्व बहुत ही कम है। इन क्षेत्रों की तीन विशाल नदियां - ओब, येनीसी एवं लीना हैं। जो संसार की बड़ी नदियों में से है। इन नदियों का अपवाह वृक्षाकार अपवाह प्रणाली के प्रकार का है।

(4) आंतरिक अपवाह क्षेत्र → एशिया के इस क्षेत्र में यह अपवाह क्षेत्र पश्चिम में अनातोलिया से लेकर पूर्व में मंचूरिया तक फैला हुआ है। इस क्षेत्र में मिलने वाली नदियों का अस्तित्व वर्षा की मात्रा पर निर्भर करता है अर्थात अधिक वर्षा होने पर ये नदियां आंतरिक झीलों में गिरती है तथा कम वर्षा प्राप्त होने पर यह रेतीले भागों में सूख जाती हैं। इस प्रकार इस क्षेत्र में नदियों का महत्व कम है। इस क्षेत्र की प्रमुख नदियां आमू दरिया, सिर दरिया है जो अरल सागर में

गिरती है। अन्य नदियों में इली, चु, तारिम, खोतान आदि है जो बाल्कश झील तथा लोपनोर झीलों में गिरती है। इस क्षेत्र में नदियों की अपेक्षा झीलों का महत्व सर्वाधिक है। कैस्पियन, बाल्कश, अरल सागर उल्लेखनीय है।